



सोशल मीडिया का युवाओं के सामाजिक जीवन पर प्रभाव

¹विनोद कुमार, ²डॉ. अमित,

¹प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, साहवा (राजस्थान)

²एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, चौ. देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा (हरियाणा)

सारांश :

युवाओं में सोशल मीडिया का उपयोग वर्तमान समय में तेजी से बढ़ता जा रहा है और साथ-साथ ही इसके युवाओं के सामाजिक जीवन पर प्रभाव भी तेजी से पड़ रहे हैं। सोशल मीडिया के प्रयोग से युवा भौगोलिक सीमाओं की बाधा को लाँघ कर सामाजिक जीवन में निरंतर दूसरे लोगों से सामाजिक रूप से जुड़ रहा है तथा सामाजिक संबंधों को विस्तार देना, सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता, समाज में व्यक्तिगत पहचान बना जैसे सकारात्मक प्रभाव देखे जा सकते हैं। युवाओं के सामाजिक जीवन पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव के साथ नकारात्मक



प्रभाव भी पड़ रहे हैं जैसे अपर्याप्तता और ईर्ष्या की भावनाओं का बढ़ना, साइबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न, गोपनीयता, साइबर सुरक्षा की चिंता, मानसिक दुष्प्रभाव, आमने-सामने की बातचीत और वास्तविक जीवन के सामाजिक कौशल में दिनों-दिन-कमी आना इत्यादि। युवाओं के सामाजिक जीवन पर सोशल मीडिया के प्रभावों को संतुलित करने के लिए डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना, स्वस्थ ऑनलाइन आदतों को बढ़ावा देना और वास्तविक जीवन के सामाजिक कौशल को प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक है।

कीवर्ड्स : सोशल मीडिया, युवा, सामाजिक जीवन, प्लेटफॉर्म।

प्रस्तावना-

आज के आधुनिक युग में सोशल मीडिया दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है, जो युवाओं को बातचीत करने, महत्वपूर्ण जानकारियों शेयर करने, दूर दराज के क्षेत्रों में रहने वाले दोस्तों, पारिवारिक सदस्यों के साथ जुड़े रहने, मनोरंजन का माध्यम और इसके अलावा ऑनलाइन व्यवसाय और ऑनलाइन विपणन गतिविधियों को संचालित करने में भी उपयोगी सिद्ध हो रहा है। हालाँकि, यह गोपनीयता, ऑनलाइन उत्पीड़न, भ्रामक सूचना और निरंतर उपयोग की व्यस्तता के कारण से चिंताओं, मानसिक द्रंद की समस्याओं का सामना कारण पड़ रहा है।

सोशल मीडिया का अर्थ

सोशल मीडिया ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और वेबसाइटों पर आधारित है, जोकि उपयोगकर्ताओं को अन्य उपयोगकर्ताओं द्वारा बनाई गई विषय सामग्री को शेयर करने और उसके साथ बातचीत करने के लिए उपयोगी बनाता है। ये ऑनलाइन प्लेटफॉर्म व्यक्ति से व्यक्ति, एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों तथा समूहों के बीच संचार करने, विषय सामग्री शेयर, सामुदायिक निर्माण करने की सुविधा प्रदान करते हैं। उपयोगकर्ता इन प्लेटफॉर्म पर अपनी व्यक्तिगत प्रोफाइल बना सकते हैं और टेक्स्ट, चित्र, वीडियो, ऑडियो, एनीमेशन इत्यादि सामग्री को पोस्ट कर सकते हैं, तथा टिप्पणियों, पसंद, शेयर और सीधे संदेशों के माध्यम से दूसरे उपयोगकर्ता के साथ जुड़ सकते हैं। कुछ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, टेलीग्राम, लिंकडइन, स्नैपचैट और यूट्यूब आदि शामिल हैं।

युवा से अभिप्राय

व्यक्ति की युवावस्था को अक्सर जीवन शक्ति, ऊर्जा और अनुभवहीनता जैसी विशेषताओं के साथ जुड़ा कर देखा जाता है। यह अवस्था विकास, अन्वेषण और सीखने की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। युवावस्था जीवन की एक ऐसी अवस्था है जो बचपन से वयस्कता तक फैली होती है, जिसमें अक्सर व्यक्ति के महत्वपूर्ण शारीरिक, संज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास लगभग पूर्ण होता है। इस अवस्था में जहां व्यक्ति अपनी पहचान की खोज करना, रिश्ते बनाना और अपने भविष्य को बनाना आरम्भ करता है। यह अवस्था उन मूल्यों, विश्वासों और व्यवहारों को स्वरूप देने में महत्वपूर्ण है जो व्यक्ति को वयस्क बनने और वैयक्तिकता को प्रभावित करेंगे।

युवा शब्द की व्युत्पत्ति पुराने अंग्रेजी शब्द जियोंग (Geong) (जिसका अर्थ युवा, युवक, तात्कालिक, नया, ताजा है) और संस्कृत शब्द युवान् से हुई है जिसका अर्थ युवा या युवक है। ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश में युवाओं को “कम आयु का होना, जीवन के शुरुआती हिस्से विशेष रूप से किशोरावस्था” के रूप में परिभाषित किया गया है।¹

विश्व स्वास्थ्य संगठन (सीएच, डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, किशोरावस्था में उन व्यक्तियों का समावेश होता है जो 10 से 19 वर्ष के आयु वर्ग में होते हैं, 15-24 वर्ष की आयु वाले व्यक्तियों को “युवा” के रूप में चिह्नित किया जाता है और इस तरह इन दोनों आयु समूहों के 10-24 वर्ष के आयु समूह को समाहित करते हुए “युवा” कहा जाता है।

सामाजिक जीवन

सामाजिक जीवन व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलू पर आधारित है जिसमें व्यक्ति किसी समुदाय या समाज के अंदर सामाजिक संबंध, संचार, नातेदारी और सामाजिक गतिविधियाँ शामिल होती हैं। इसमें जीवन के सभी पहलू शामिल हैं जिसमें व्यक्ति एक दूसरे से सामाजिक व्यवहार, सामाजिक संबंध के माध्यम से जुड़ते हैं और सांझी सांस्कृतिक, मनोरंजक, प्रथाओं, रीति-रवाजों, सांप्रदायिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। सामाजिक जीवन में औपचारिक और अनौपचारिक बातचीत, शिक्षण संस्थाओं या कार्यस्थलों में, दोस्तों के साथ सभाएं या सामुदायिक कार्यक्रमों में भागीदारी भी शामिल हैं। सामाजिक जीवन मानव कल्याण के लिए अति आवश्यक है, क्योंकि सामाजिक जीवन से ही व्यक्ति के अभी आवश्यकताओं की पूर्ति के अवसर प्रदान करता है, और समाजों व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत पहचान और सामाजिक संगठन, सुदृढ़ता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

अध्ययन के उद्देश्य-

- सोशल मीडिया का युवाओं के सामाजिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना ।
- सोशल मीडिया का युवाओं पर सकारात्मक प्रभाव को जानना ।
- सोशल मीडिया का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना ।

अध्ययन की विधि-

अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि द्वारा पूर्व में हुए शोध कार्य, शोध पत्र, आलेख, साहित्य का विस्तार से अध्ययन कर द्वितीयक आँकड़े एकत्रित किये गए हैं।

शोध साहित्य का अवलोकन-

वर्मा अंशुल वर्मा, डॉ. वी. भुवनेश्वरी वी).2023² युवाओं के पास स्मार्टफोन, टैबलेट, डेस्कटॉप, लैपटॉप और गेमिंग कंसोल सहित विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर डिजिटल जानकारी तक अद्वितीय पहुंच है, जिससे मीडिया परिदृश्य पहले से कहीं अधिक व्यापक और विविध है। इस परिदृश्य का एक अनिवार्य तत्व सोशल मीडिया है। सोशल मीडिया के प्रभाव को किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य की संपूर्ण समझ के लिए ध्यान में रखा जाना चाहिए। भले ही सोशल मीडिया का नियमित रूप से उपयोग करने से व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, लेकिन साथ ही इसके नुकसान भी हैं। सोशल मीडिया का उपयोग और खराब भावनात्मक स्वास्थ्य में वृद्धि देखी गई है।

सुमादेवी एस).2023¹ युवाओं पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव बेहतर संचार और कनेक्टिविटी, समुदाय और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देने में स्पष्ट है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म प्रचुर मात्रा में जानकारी और शैक्षिक संसाधन प्रदान करते हैं, जिससे युवाओं को विविध दृष्टिकोण और ज्ञान तक पहुंच प्राप्त होती है। इसके अलावा, यह सामाजिक जागरूकता बढ़ाने, सक्रियता को

प्रोत्साहित करने और सकारात्मक कारणों को बढ़ावा देने, युवाओं को अपने समुदायों में परिवर्तन लाने वाले बनने के लिए सशक्त बनाने का एक शक्तिशाली उपकरण बन गया है। हालाँकि, इन लाभों के साथ-साथ, सोशल मीडिया युवाओं के लिए कई नकारात्मक परिणाम भी प्रस्तुत करता है। अत्यधिक उपयोग से मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं, जिनमें चिंता, अवसाद और अपर्याप्तता की भावनाएं शामिल हैं, जो इन प्लेटफॉर्मों पर प्रचलित तुलना की संस्कृति और अवास्तविक मानकों के कारण और बढ़ गई हैं। साइबरबुलिंग और गोपनीयता संबंधी चिंताएं युवा व्यक्तियों के लिए गंभीर जोखिम पैदा करती हैं, जिससे उनकी भावनात्मक भलाई और सुरक्षा प्रभावित होती है।

नूरी नूरियालाई, सईस अजमल, अनवारी गुलाका)2023⁽⁴⁾ विकासशील देशों में युवाओं पर सोशल मीडिया सामग्री के हानिकारक प्रभाव के बारे में कोई गंभीर जागरूकता और संज्ञान नहीं है। सोशल मीडिया का उपयोग करने से युवाओं का सामाजिक व्यवहार बदल जाता है और विश्वसनीय संसाधनों का उपयोग करने से युवाओं के सामाजिक जीवन पर सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भले ही सोशल मीडिया साइटों और प्लेटफॉर्मों के अधिक फायदे और सकारात्मक प्रभाव हैं और बहुत सारे संचार, व्यवसाय और मनोरंजन के अवसर प्रदान करते हैं, यह सामाजिक अलगाव, चिंता, अवसाद, साइबरबुलिंग, कामुकता, गोपनीयता की हानि, आतंकवाद आदि को कम करता है। युवाओं में आमने सामने की बातचीत की संख्या बढ़ रही है क्योंकि वे आम तौर पर अपना अधिकांश समय-

ऑनलाइन सोशल प्लेटफॉर्म पर बिताते हैं। सोशल मीडिया सामाजिक अलगाव की ओर ले जाता है और इससे युवाओं पर शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक मुद्दों जैसे कई प्रभाव पड़ सकते हैं। इससे अवसाद, चिंता और कई अन्य समस्याएं हो सकती हैं।

कुसुमा आशाविद्या).2020⁽⁵⁾ सोशल मीडिया ऑनलाइन में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है जो समुदाय के एक समूह को जोड़ता है जो ज्ञान का आदान प्रदान करता है। कुछ बड़े पैमाने पर सोशल प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक-, विकिपीडिया, ट्विटर, व्हाट्सएप, पिनटरेस्ट, लिंकडइन, इंस्टाग्राम और रेडिट का उपयोग किया जाता है। ये सिर्फ सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म ही नहीं हैं, बल्कि जहां लोग अपना विवरण लोगों और समुदाय के साथ साझा कर सकते हैं। कंपनी के मालिक सोशल मीडिया के जरिए भी अपना सामान बेचेंगे और क्राउडफंडिंग कमाएंगे। डेटा एनालिटिक्स सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म से डेटा इकट्ठा करता है और उसका विश्लेषण करता है जो कंपनियों और व्यवसायों को स्मार्ट विकल्प चुनने की अनुमति देता है। सोशल मीडिया का भी छात्रों और युवाओं पर मानव स्वभाव पर विचार करने और लालची और कट्टर बनने पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ रहा है।

डॉ जेसु कुलंदैराज ए.(2014)⁽⁶⁾ इस अध्ययन में सोशल नेटवर्किंग साइटों के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों और कैसे देखा गया सोशल नेटवर्किंग साइटें युवाओं की जीवनशैली को प्रभावित करती हैं। सोशल नेटवर्किंग साइटें युवाओं को अपनी आवाज उठाने में सक्षम बनाती हैं सामाजिक मुद्दों के खिलाफ और समाज के कल्याण के लिए जानकारी साझा या अपलोड करते हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के बाद से व्यक्तिगत और सामाजिक पहलुओं को विकसित करने के लिए सभी तरीके और साधन प्रदान कर सकते हैं, युवाओं को इसका पता लगाना होगा इन साइटों की संभावनाएं तथा भले ही यह युवाओं पर कुछ नकारात्मक प्रभाव डालता है, इन नकारात्मक प्रभावों के प्रति सुधारात्मक और निवारक उपाय किए जाने चाहिए। युवाओं को अच्छी तरह से शिक्षित होना चाहिए और सामाजिक समस्याओं के बारे में उचित जागरूकता होनी चाहिए। सोशल नेटवर्किंग साइट्स युवाओं की जीवनशैली को प्रभावित करती हैं। ब्रांड और कंपनियां ऐसा कर सकें युवाओं में वफादारी पैदा करने के लिए सोशल नेटवर्किंग साइट्स के स्थान का फायदा उठाएं। अगर सोशल नेटवर्किंग साइट्स प्रमोट करती हैं अपने पोस्ट, वीडियो और संदेशों के माध्यम से एक स्वस्थ जीवन शैली, जो एक स्वस्थ युवा पीढ़ी को विकसित करने में मदद करेगी।

सोशल मीडिया के प्रभाव की विवेचना एवं विश्लेषण -

सोशल मीडिया का युवाओं के सामाजिक जीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है

➤ सोशल मीडिया का युवाओं के सामाजिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव

- **सामाजिक संबंध में निरंतरता :** सोशल मीडिया के प्रयोग से युवाओं को भौगोलिक दूरियों के बावजूद अपने दोस्तों, परिवार और साथियों से निरंतर जुड़े रहने में सक्षम बनाते हैं। यह निरंतरता ही रिश्तों को बढ़ावा देती है और आसान संचार की अनुमति देती है, जिससे सामाजिक बंधन मजबूत होते हैं।

- **विस्तारित सामाजिक जुड़ाव:** सोशल मीडिया युवाओं को अपने आस पास के परिवेश से परे अपने सामाजिक-जुड़ाव का विस्तार करने के अवसर प्रदान करता है। वे ऐसे लोगों से जुड़ सकते हैं जो समान रुचियों, शौक और अनुभवों को साझा करते हैं, जिससे विविध मित्रता और समुदायों के निर्माण में सुविधा होती है।
- **सामाजिकीकरण में सहायक:** सोशल मीडिया युवाओं को एक ऐसा प्लेटफार्म प्रदान है जो मैसेजिंग, वीडियो कॉल और समूह चैट जैसी विभिन्न सुविधाओं द्वारा शारीरिक रूप से दूरी होने पर भी दूसरों के साथ सामाजिक रूप से जुड़े रहते हैं। सोशल मीडिया वास्तविक समय में बातचीत करने में सक्षम प्रदान करता है जोकि सामाजिकीकरण में सहायक सिद्ध होता है।
- **व्यक्तिगत पहचान की अभिव्यक्ति:** सोशल मीडिया युवाओं को व्यक्तिगत प्रोफाइल, सामग्री साझा करने और विभिन्न सामाजिक चर्चाओं में शामिल होने से अपनी पहचान, रुचियों और व्यक्तित्व को व्यक्त करने की सुविधा देता है। यह युवाओं को अपनेपन, मान्यता की भावना में योगदान देता और आत्मअभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है।
- **सामाजिक कार्यक्रमों और गतिविधियों की सुविधा:** युवाओं द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग अक्सर सामाजिक कार्यक्रमों, समारोहों और गतिविधियों को आयोजित करने के लिए किया जा रहा है। युवा आसानी से ऑनलाइन सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन बना सकते हैं और प्रचार कर सकते हैं, जिससे सामाजिक जुड़ाव और भागीदारी के अवसर बढ़ते हैं।

➤ सोशल मीडिया का युवाओं के सामाजिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव

- **सामाजिक तुलना और ईर्ष्या का बढ़ना:** सोशल मीडिया युवाओं में अपर्याप्तता और ईर्ष्या की भावनाओं को बढ़ा सकता है क्योंकि युवा सोशल मीडिया के माध्यम से अपने जीवन, उपलब्धियों की तुलना दूसरों की सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई उपलब्धियों से कर ले लगता है। इससे नकारात्मक धारणा, आत्म सम्मान-की कमी और स्वयं के जीवन से असंतोष उत्पन्न हो सकता है।
- **आमनेसामने- के संवाद में अभाव आना:** युवाओं द्वारा अत्यधिक सोशल मीडिया के उपयोग से आमनेसामने- की बातचीत और वास्तविक जीवन के सामाजिक कौशल में दिनों दिन-कमी आती जा रही है। युवा व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे से-संवाद करने की तुलना में ऑनलाइन संवाद करने में वृद्धि और अधिक सहज हो सकते हैं, जिससे संभावित रूप से सार्थक रिश्ते विकसित करने और सामाजिकीकरण की उनकी क्षमता में बाधा आ सकती है।
- **साइबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न:** जैसे जैसे युवाओं में-सोशल मीडिया की निर्भरता बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे साइबरबुलिंग, उत्पीड़न और ऑनलाइन संघर्षों के लिए आधार बन ते जा रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्मस् पर जानबुज कर नकारात्मक टिप्पणियाँ, अफवाहें फैलाना और अपमानजनक व्यवहार भावनात्मक संकट उत्पन्न करता है जिससे युवाओं में, चिंता और अलगाव का कारण बन सकते हैं। साइबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न के करना युवाओं के सामाजिक जीवन, सामाजिक रिश्तों और सामाजिकीकरण को नुकसान पहुंचा सकते हैं।
- **अवसर छूट जाने का डर (फोमो):** सोशल मीडिया के माध्यम से नवीन सूचनाएँ तथा दूसरों के जीवन से जुड़ी मुख्य बातों से लगातार संपर्क में रहने से युवाओं में फोमो संबंधी तनाव हो सकता है। युवाओं में सोशल मीडिया पर अपडेट्स घटनाओं, अवसरों को चूकने के डर से तनाव, चिंता देखी जा सकती है जिनसे, युवाओं का जुड़े रहने की निरंतर आवश्यकता होती है। सोशल मीडिया पर अवसरों के छूट जाने का डर युवाओं के सामाजिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- **गोपनीयता और साइबर सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** सोशल मीडिया प्लेटफार्मस् के प्रयोग करते समय युवा जाने-अनजाने में बहुत से संवेदनशील जानकारी साझा कर देते हैं, जिससे उनकी गोपनीयता और साइबर सुरक्षा सम्बंधित से समझौता हो सकता है। सोशल मीडिया पर गोपनीय सूचना व पहचान की चोरी, ऑनलाइन शिकारियों द्वारा सूचनाओं का गलत तरीके से प्रयोग और अन्य डिजिटल खतरों की संभावना बनी रहती है, जिससे युवाओं के सामाजिक जीवन और ऑनलाइन बातचीत में विश्वास प्रभावित हो सकता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव:** युवाओं द्वारा दिन का अधिकांश समय सोशल मीडिया पर व्यतीत होता है जिससे युवा की सामाजिक रूप से आमने सामने की बातचीत नहीं करता धीरे-धीरे-सोशल मीडिया सामाजिक अलगाव की ओर ले जाता है।

युवाओं के भावनात्मक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक रूप से कई प्रभाव पड़ते हैं। इससे युवाओं में अवसाद, चिंता और अन्य कई मानसिक दुष्प्रभाव की समस्याएं आ जाती हैं।

निष्कर्ष -

युवाओं में सोशल मीडिया का प्रयोग अत्यंत अधिक बढ़ गया है और साथ ही इसके युवाओं के सामाजिक जीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। युवाओं के सामाजिक जीवन पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। युवा भौगोलिक सीमाओं की बाधा को लाँघ कर सामाजिक जीवन में निरंतर दूसरे लोगों से सामाजिक रूप से जुड़ रहा है तथा सामाजिक संबंधों को विस्तार देना, सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता, समाज में व्यक्तिगत पहचान बना रहा है। युवा सोशल मीडिया के माध्यम से वास्तविक समय में अन्य लोगों से संवाद स्थापित कर रहा है, जोकि सामाजिकीकरण में सहायक सिद्ध हो रहा है। युवाओं के सामाजिक जीवन पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव के साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहे हैं जैसे अपर्याप्तता और ईर्ष्या की भावनाओं का बढ़ना, साइबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न, गोपनीयता, साइबर सुरक्षा की चिंता, मानसिक दुष्प्रभाव, आमनेसामने- की बातचीत और वास्तविक जीवन के सामाजिक कौशल में दिनों दिन-कमी आना इत्यादि। युवाओं के सामाजिक जीवन पर सोशल मीडिया के प्रभावों को संतुलित करने के लिए डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना, स्वस्थ ऑनलाइन आदतों को बढ़ावा देना और वास्तविक जीवन के सामाजिक कौशल को प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक है। मातापिता-, शिक्षक तथा नीति निर्माता युवाओं को जिम्मेदारी से और सुरक्षित रूप से सोशल मीडिया का प्रयोग करने के लिए मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, ताकि युवाओं के सामाजिक जीवन पर कोई नकारात्मक प्रभाव ना पड़े।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. जोशी, शालिनी, जोशी, शिवप्रसाद जोशी नया मीडिया अध्ययन और अभ्यास. पेंगुइन बुक्स .(2015) .।
2. गुप्ता, एम.एल., शर्मा, डॉ. डी.डी. 20)23.(समाजशास्त्र के सिद्धान्त. साहित्य भवन पब्लिकेशन ।
3. मिश्र, डॉ.राजेन्द्र ., (.(2009मीडिया अनुसंधान दिल्ली: तक्षशिला प्रकाशन .।
4. दयाल, मनोज, (.(2003मीडिया शोध पंचकुला: हरियाणा साहित्य अकादमी .।

¹ <https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/82388/1/Unit-1.pdf>

² International Journal of Research Publication and Reviews, Vol 4, no 7, pp 2657-2667 July 2023/<https://ijrpr.com/uploads/V4ISSUE7/IJRPR15598.pdf> dated06.04.2024.time4:12PM.

³https://www.researchgate.net/publication/375325283_Impact_of_social_media_on_Youth_Comprehensive_Analysis# dated06.04.2024.time3:29PM.

⁴ <http://ijhess.com/index.php/ijhess/article/view/613> Vol. 3 No. 1 (2023): IJHES AUGUST 2023 dated08.04.2024.time11:15PM.

⁵https://www.researchgate.net/publication/347437746_Impact_of_Social_Media_on_Youth#https://www.researchgate.net/publication/347437746_Impact_of_Social_Media_on_Youth# dated06.04.2024.time3:40PM.

⁶ <https://www.ijtra.com/special-issue-view.php?paper=impact-of-social-media-on-the-lifestyle-of-youth.pdf> dated 06.04.2024.time4:26PM.